सूरदास के पद

मेरे लाल

(1) समानार्थी शब्द पद से चुनकर लिखें।

खुश हुई	- फूली	लीन	- मग्न
युवती	- तनु	बाहर से	- बाहिर ते
देखौ धौं	- देखा तो	आँख/नैन	- नयन
छोटा	- तनक	दृष्टि	- चितवन
दाँत	- दँति/द्विज	सफल करो	- सुफल करो
दोनों	- दोउ	संतुष्ट हुई	- अघाई
कान्ह	- स्याम	बिजली	- बिजु
जम गई	- जमाई	होश	- सुधि

(2) माता यशोदा क्यों खुश हुई?

अपने बेटे का सुंदर चेहरा देखकर माता यशोदा खुश हुई।

(3) "तनु की सुधि भूली।" तनु कौन है? क्यों तनु के सुधि भूली?

कृष्ण की माता यशोदा है। अपने बेटे के दूध की दाँतों को देखकर आह्लाद और प्यार में मग्न माता यशोदा अपने आपको भूल गई।

(4) यशोदा क्यों नंद को बुलाती है?

बेटे का सुंदर सुखदाई रूप देखने केलिए।

(5) यशोदा ने नंद से क्या कहा?

वह कहती है, बेटे के छोटे-छोटे दूध की दाँतों को देखने पर नयनों केलिए खुशी है।

(6) नंद के मुख और दृष्टि क्यों खुशी से भर गए?

अपने बेटे के सुंदर चेहरे और दूध की दँतियाँ देखकर नंद के मुख और दृष्टि खुशी से भर गए।

(7) "मनो कमल पर बिजु जमाई" - तात्पर्य क्या है?

कृष्ण के छोटे दूध की दँतियों ऐसा लगता है मानो कमल पर बिजली जम गई हो।

(8) "मनो कमल पर बिजु जमाई" - 'कमल' और 'बिजु' किन-किन को सूचित करते हैं?

कृष्ण के मुख कमल है और बिजली छोटे-छोटे दूध की दँतियाँ हैं।

(9) सूरदास क्या कहते हैं?

सूरदास कहते हैं कि किलकारी करनेवाले कृष्ण के दाँतों को देखकर ऐसा लगता हैं मानो कमल पर बिजली चमक गई हो।

(10) कृष्ण के बाललीला संबंधी पद की आस्वादन टिप्पणी तैयार करें।

सूरदास सगुण भक्तिधारा के कृष्णभक्त कवि हैं। सूरसागर की बाललीलाएँ उनकी वात्सल्य वर्णन का दृष्टांत है। 'मेरे लाल' ऐसे एक पद है।

अपने बेटे का सुंदर चेहरा देखकर माता यशोदा बहुत खुश हुई। अपने बेटे के दूध की दाँतों को देखकर आह्लाद एवं प्यार में मग्न वह अपने आप को भूल जाती हैं। वह बाहर से अपने पति को बुलाकर बेटे का सुंदर सुखदाई रूप देखने को कहती है। वह कहती है, बेटे के छोटे-छोटे दुधिए दाँतों को देखना नयनों केलिए सुख दायक है। पत्नी की बातें सुनकर नंद अंदर आए, उनके मुख एवं दृष्टि भी खुशी से भर गए। सूरदास कहते हैं कि किलकारी करनेवाले कृष्ण के दाँतों को देखकर ऐसा लगता है मानो कमल पर बिजला जम गई हो। बालकृष्ण का सौंदर्य अनुपम है। उनकी चेष्टाएँ हृदयहारी तथा अवर्णनीय है।

हे कान्ह

(1) समानार्थी शब्द पद से चुनकर लिखें।

वन	- बन		
कामकाज	- धाम काम	भूल गई	- बिसरीं
मर्यादा	- मरजाद	वेद	- बेद
थोड़ा-भी	- नेकहु	सागर	- सिंधु
नदि	- सरिता		
गोपिकाएँ	- ललनागन	प्र वाह	- ढरनि
बही	- ढरीं	स्नेह	- नेह
लोग	- जन	आशंका	- शंका
हर लिया	- हरि लीन्हो	चतुर	- नगर
नया	- नवल	कृष्ण	- हरि

(2) वन से मुरली गान सुनने पर गोपिकाएँ ने क्या किया?

जब वन से मुरली गीत सुनाई पड़ा तब गोपिकाएँ चकित होकर अपने सारे कामकाज भूल गई।

(3) गोपिकाएँ कब अपने को भूलकर दौड़ी?

वन से मुरली के मीठे स्वर सुनाई पड़ा तो गोपिकाएँ अपने को भूलकर दौड़ीं।

(4) मुरली गान सुननेवाली गोपिकाएँ को किसका ड़र नहीं लगा?
अपने कुल की की मर्यादा और वेदों के अनुशासन का।

(5) "स्याम सिंधु सरिता ललनागन" - सिंधु और सरिता कौन-कौन हैं?
सिंधु कृष्ण है और सरिता गोपिकाएं।

(6) "स्याम सिंधु सरिता ललनागन जल की ढरनि ढरीं" -सूरदास ने ऐसा क्यों तुलना की हैं?
जब वन से मुरली का स्वर सुनाई पड़ा तो गोप कन्याएँ सर्वस्व भूलकर उस मीठे स्वर के पीछे गई। जिस तरह नदियों से जल सागर की ओर बहती है उसी तरह यहाँ कृष्ण रूपी सागार में नदी के जल धारा की तरह गोप कन्याएँ जा मिली। यहाँ कृष्ण की तुलना सागर से और गोप कन्याओं की तुलना नदी के जल प्र वाह से की गई है।

(7) गोपिकाएँ कृष्ण केलिए क्या-क्या छोड़ने केलिए तैयार होती हैं?
गोपिकाएँ कृष्ण केलिए अपने कुल मर्यादा, वेदों का अनुशासन, अपने सुति और पति के स्नेह, घर-बार आदि सब कुछ छोड़ने केलिए तैयार होती है।

(8) मुरली के स्वर में लीन गोपिकाएँ किन-किन कार्यों पर ध्यान न दिए?
मुरली के स्वर में लीन गोपिकाएँ, पुत्र -पति का स्नेह, घर-बार तथा लोक-लाज की परवाह किए बिना कृष्ण की ओर बहने लगा।

(9) सूरदास ने गोपिकाओं के प्रेम का चित्र ण कैसे की है?
कृष्ण के मुरली के मीठे स्वर सुनते ही गोपिकाएँ सबकुछ भूलकर उस स्वर की ओर दौड़ी। वह अपने सारे कामकाज भूल गईं, कुल की मर्यादा और वेद के अनुशासन आदि तक नहीं डरीं।पुत्र -पति का स्नेह, घर-बार तथा लोक-लाज की परवाह किए बिना कृष्ण की ओर बहने लगा।सूरदास कहते हैं कि चतुर कृष्ण नित्य नए तरीके से गोपिकाओं के मन को हर लेते हैं।

(10) आस्वादन टिप्पणी लिखें।
सूरदास सगुण भक्तिधारा के कृष्णभक्त कवि है। हे कान्ह में कृष्ण और गोपिकाओं के प्रेम का सुंदर वर्णन हुआ है।
जब वन से मुरली का स्वर सुनाई पड़ा तब गोपिकाएँ चकित होकर अपने कामकाज सबकुछ भूल गई। कुल की मर्यादा, वेदों के अनुशासन से वे बिलकुल नहीं डरीं।पुत्र -पति का स्नेह, घर-बार तथा लोक-लाज की परवाह किए बिना वे कृष्ण रूपी सिंधु की ओर नदी जल के समान जा मिलीं। सूरदास कहते हैं कि चतुर कृष्ण नित्य नए तरीके से गोपिकाओं के मन को हार लेते हैं।
कृष्ण और गोपिकाओं के प्रेम का सुंदर चित्र ण सूरदास ने यहाँ खींचा है।

अनुवर्ती कार्य:

(1) मुरली की ध्वनी में लीन प्रणयातुर दो गोपिकाओं के बीच होनेवाली बातचीत लिखें।

सहायक संकेत:

मुरली की ध्वनि की मधुरिमा - कृष्ण के प्रति अनुराग – अपने को भूल जाना।

गोपिका 1 : अरे, इतना मीठा स्वर! कहाँ से होगा?
गोपिका 2 : क्या तुम भूल गई! यह तो कान्ह के मुरली से हैं.....
गोपिका 1 : हाँ....हाँ, मैं तो एक क्षण केलिए सबकुछ भूल गई।
गोपिका 2 : मन में उससे मिलने की इच्छा है, लेकिन .....
गोपिका 1 : मेरा मन भी यहाँ नहीं है। परंतु ....., हम क्या करें?
गोपिका 2 : क्या करें? जाएँ वन की ओर .....
गोपिका 1 : जाने की इच्छा तो ज़रूर है.....
गोपिका 2 : तो जाएँ। मैं भी आती हूँ.....
गोपिका 1 : लेकिन हमारे घरवाले क्या कहेंगे? डर लगती हैं....
गोपिका 2 : ज़रूर....मुझे भी। लेकिन मुझे अपने को रोक नहीं सकता।
गोपिका 1 : रुको, मैं भी तेरे साथ आऊँगी।
गोपिका 2 : मार तो ज़रूर खाऊँगी...लेकिन यह मुरली नाद सुनकर हम कैसे.....
गोपिका 1 : मैं किसीकी परवाह नहीं करती.....
गोपिका 2 : मैं भी.....तो जल्दी चल।

HSSLIVE.IN

परीक्षा केंद्रित कुछ और प्रश्न। इनके उत्तर लिखने का प्रयास करें:-

(1) यशोदा आह्लाद के साथ बाहर से अपने पतिदेव को बुलाकर सुत का सुंदर रूप देखने को कहती है। यशोदा और नंद के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

(2) मुरली की ध्वनि में मग्न एक गोपिका कृष्ण को चिट्टी लिखती है। वह चिट्टी कल्पना करके लिखें।